जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अप्रैल 2022 ।। अंक – 21 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

आय के साथ सामाजिक सम्मान
अब मंजू देवी की पहचान
(पृष्ठ – 02)

बाल विवाह के खिलाफ
सरोज चला रही अभियान
(पृष्ठ – 03)

स्वस्थ दीदियों से
सशक्त आजीविका का संवर्द्धन
(पृष्ठ – 04)

चमकी बुखार (ए.ई.एस.) से बच्चों की सुरक्षा

जीविका स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर मुजफ्फरपुर और आसपास के उच्च जोखिम वाले जिलों में चमकी बुखार (ए.ई.एस.) से निपटने के लिए जन जागरूकता अभियान चला रही है। इसके तहत समुदाय को ए.ई.एस. बीमारी के लक्षणों की पहचान करने के बारे में बताया जाता है। साथ ही बच्चों में इसके लक्षण दिखते ही तुरंत क्या कदम उठाने चाहिए, इस बारे में भी प्रेरित किया जाता है। महिलाओं को स्वयं सहायता समूह की बैठकों में और ग्राम संगठन की स्वास्थ्य उप–समिति की दीदियों तथा आशा द्वारा गृह भ्रमण कर उसे एईएस के लक्षणों के बारे में बताया जाता है। साथ ही उनके घर में एक अनुस्मारक स्टिकर भी लगाया जाता है। इससे महिलाएं अपने बच्चे में एईएस के लक्षणों की पहचान करने में सक्षम हुई हैं। साथ ही उनके द्वारा पहले से एकत्र किए गए सेवा प्रदाताओं के संपर्क नंबरों ने चिकित्सा सहायता तेजी से प्राप्त करने में मदद मिल रही है।

ए.ई.एस. के लिए कुपोषण, तीव्र गर्मी के साथ आर्द्रता और अस्वच्छता जैसे कारक जिम्मेदार होते हैं। हालांकि इसके सटीक कारण की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। गर्मी और प्री–मानसून महीनों में इसका खतरा ज्यादा होता है। इसने 2019 में ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों के कई बच्चों के जीवन को बर्बाद कर दिया था। इसके बाद जीविका ने समूह एवं ग्राम संगठन के माध्यम से समुदाय के बीच जागरूकता का प्रसार एवं ए.ई.एस. के खिलाफ निवारक–तैयारी अभियान शुरू किया। निवारक और उपचारात्मक उपायों के तहत समूह सदस्यों के बीच विषयगत ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करता है, उन्हें खतरे के संकेतों का तेजी से निदान करने में सक्षम बनाता है, चिकित्सा सुविधा तक पहुंचने में देरी को रोकता है और जोखिम व्यवहार को कम करता है।

ए.ई.एस. को रोकने के लिए बहुआयामी रणनीति तैयार की गई है:–

- समूह की बैठकों, गृह भ्रमण, ऑडियो कॉल, व्हाट्सएप अश्वडियो–वीडियो श्रृंखला, जीविका मोबाइल वाणी से संदेशों का प्रसारण, चमकी चौपाल (सार्वजनिक बैठक बिंदुओं पर विषयगत चर्चा), सामुदायिक जागरूकता बैठकों सहित 'मीडिया–मिक्स' के माध्यम से सामुदायिक जागरूकता और महादलित एवं अत्यंत पिछड़ी बस्तियों में, सामाजिक–व्यवहार परिवर्तन सामग्री (फ्लायर, लीफलेट, स्टिकर, मॉड्यूल, फ्लिपबुक) आदि के माध्यम में एईएस के बारे में समुदाय स्तर पर जागरूकता फैलाई जा रही है।
- जीविका मोबाइल वाणी के तहत लगातार एईएस से जुड़े संदेशों का प्रसारण किया जा रहा है। इसके लिए अपने मोबाइल से 8800458666 नंबर पर मिस्ड कॉल कर एईएस संबंधी जानकारियां सुनी जा सकती है।
- व्यवहार परिवर्तन: पानी, स्वच्छता और स्वच्छता संबंधी आदतों को बढ़ावा देने एवं व्यवहार परिवर्तन हेतु समुदाय को प्रेरित किया जा रहा है।
- इसके अलावा एईएस के लक्षण परिलक्षित होते ही स्वास्थ्य सेवाओं तक समुदाय की पहुंच आसान बनाने के उपाय किए जा रहे हैं।
- सामुदायिक जागरूकता में वृद्धि और एईएस मामलों की संख्या में कमी से आशाजनक परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

सामुदायिक स्तर पर जागरूकता और तैयारियों के लिए महत्वपूर्ण संदेश

- बीमारी के लक्षण पहचानने में देरी न हो
- बचाव में देरी न हो
- स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने में देरी न हो
- बच्चों का लालन–पालन सही हो

हुनर से सशक्तिकरण की ओर

घर में निर्मित खाद्य पदार्थ और उत्पादित सब्जियों को भी व्यावसायिक रूप देकर आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हुआ जा सकता है। सरिता प्रजापति ने इसे प्रमाणित भी किया है। अपनी माँ से अचार, पापड़, भुजिया, अदवरी–दनवरी का निर्माण सीखकर ससुराल में आने के बाद इसे व्यवसाय के तौर पर अपनाया। यही नहीं वो जीविका से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लेकर मशरूम का भी व्यवसाय कर आर्थिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर हैं।

सरिता बक्सर जिला अंतर्गत सिमरी प्रखंड के छोटका ढकाइच गाँव के राजू प्रसाद से ब्याही गई हैं। ससुराल में आने के बाद इनके पति ने घरेलु खाद्य पदार्थो के निर्माण को व्यावसायिक रूप देने के लिए प्रेरित किया। सरिता वर्ष 2019 में अन्नू जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। पति के द्वारा घर के खर्चे के लिए दिए गए रुपये में से वो समूह में दस रुपये बचत भी करने लगीं। सरिता ने भी मशरूम उत्पादन के लिए आरसेटी के माध्यम से दस दिन का प्रशिक्षण लिया। तत्पश्चात कृषि विभाग को मशरूम उत्पादन हेतु 90 प्रतिशत अनुदान के लिए ऑन–लाइन आवेदन किया। स्वीकृति मिलते ही सरिता ने अपने घर में ही मशरूम उत्पादन शुरू किया। हॉर्टकल्चर विभाग से सरिता को चार सौ मशरूम के पैकेट मिले। मशरूम के चार सौ पैकेट से शरू हुआ उत्पादन अब डेढ़ हजार के पैकेट तक पहुँच गया है। प्रति दिन चार से पांच किलो मशरूम दो सौ रुपये प्रति किलो की दर से बिक रहे हैं। मशरूम उत्पादन का मौसम समाप्त होने के बाद सरिता अपने घर में ही आचार, पापड, भुजिया और अद्वरी–दनवरीका उत्पादन करती हैं। इन उत्पादों को अपने गाँव–प्रखंड के साथ ही बक्सर जिले के विभिन्न बाज़ारों एवं दुकानों में मांग के अनुरूप आपूर्ति करते हैं। इस व्यवसाय से भी में उन्हें काफी मुनाफा हो रहा है। प्रति माह दस से पंद्रह हजार रूपया मुनाफा हो रहा है।

आय के साथ सामाजिक सम्मान अब मंजू देवी की पहचान

इंटर पास मंजू देवी ने पारिवारिक जीवन की कठिनतम मुसीबतों का सामना किया है। पति चंदेश्वरी महतो ठेला चलाकर अपने 6 सदस्यीय परिवार का भरण पोषण किया करते थे। एक दिन अचानक उनके पति की तबीयत खराब हो गई। डॉक्टर से जांच कराने पर टी. बी. रोग का पता चला। मंजू के लिए यह समाचार किसी घोर विपत्ति से कम नहीं था। पति के टी.बी. से ग्रसित होने के बाद घर का सुख मंजू के लिए मानो सपना हो गया। जब आमदनी के सभी स्रोत बंद हो गए तब मंजू ने परम्परा के विपरीत खुद ठेला चला कर फास्ट फूड बेचना शुरू किया। फास्ट फूड बेचने से होने वाली आमदनी से पति का इलाज और बहुत मुश्किल से बच्चों की परवरिश करती थी।

पति का इलाज कराने के बाद उनके पति ठीक हो गए। मंजू ने अपनी बचत की राशि से बकरी पालन शुरू किया। कुछ राशि हाथ में आने के बाद मंजू ने गौ पालन का काम शुरू किया। दूध बेचकर होने वाली आमदनी से मंजू के परिवार की आर्थिक सेहत सुधारने लगी। अपने हुनर के दम पर मंजू ने साडी में स्टोन लगाने का काम शुरू किया। जीविका समूह से ऋण लेकर एक दुकान खोला। रेडीमेड कपडे के साथ सूट की सिलाई और साडी में स्टोन लगाने का काम शुरू हुआ। धीरे – धीरे ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी। मंजू देवी ने अपने समूह की 7 अन्य दीदियों को भी स्टोन लगाने का काम सिखाया। एक दीदी सिलाई के काम को बखूबी संभाल रही हैं। मंजू खुद भी स्टोन लगाती है, कपडे बेचती हैं और साईकिल से घूम घूम कर ग्राहकों का सामान भी उनके घर तक पहुंचाती हैं.। स्वयं के अतिरिक्त 7 अन्य लोगों को भी रोजगार दे रखी हैं। वर्तमान में इस कार्य से मंजू देवी माह के 8 से 9 हजार रुपये आमदनी अर्जित कर रही हैं। मंजू देवी कहती हैं " जीविका से जुड़कर मुझे ;ण पाने में बहुत आसानी हुयी और सबसे बड़ा परिवर्तन ये आया कि पहले लोग मुझे चाउमीन वाली कहते थे अब जीविका वाली दीदी कहकर बुलाते हैं। बहुत खुशी मिलती है।

बाल विवाह के खिलाफ सरोज चला रही अभियान

सरोज देवी मधेपुरा जिला के गम्हरिया प्रखंड अन्तर्गत गम्हरिया पंचायत की रहने वाली हैं। सरोज जब छठी क्लास में थी, उसी समय वर्ष 1994 में परिवारवालों ने उनकी इच्छा के विरू) उनकी शादी कर दी। शादी के बाद उनके पढ़ने की इच्छा को उनके ससुराल वालों ने आर्थिक तंगी के नाम पर दबा दिया। इतना ही नहीं शादी के एक वर्ष बाद ही वह मां बन गयी और प्रसव के दौरान उन्हें कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ा।

कुछ दिनों बाद दीदी के पति दीदी को छोड़ परदेश चले गए एवं तीन–चार साल तक उनका कोई अता–पता नही चला। एक दिन जानकारी मिली कि उनके पति ने दूसरी शादी कर ली। दीदी काफी परेशान हो गई और मायका चली आई। दीदी के घर वालों ने आठ वर्ष बाद उनकी दूसरी शादी करा दिया। पति दिल्ली में मजदूरी कर परिवार का भरण–पोषण करते थे। दीदी भी गाँव में मजदूरी करने लगी। परिवार की जिम्मेदारी, बच्चे का लालन–पालन एवं अपने सेहत को मुश्किल से संभाल रही सरोज दूसरी बार मां बन गयी। महज 23 साल में वह तीन बच्चों की मां बन चुकी थीं।

वर्ष 2017 में सरोज दीदी जीविका के साथ जुड़ गयीं। जीविका से जुड़ने के पश्चात इनके आत्मबल को काफी बढ़ावा मिला। उनके बढ़े आत्मबल का एक नमूना यह है कि तीन बच्चों की जिम्मेदारियों को संभालते हुए उन्होंने अपनी अधुरी पढ़ाई पूरी करने का निर्णय लिया। धीरे–धीरे कर उन्होंने बी0 ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। सरोज दीदी आस–पड़ोस की महिलाओं की प्रेरणा–स्त्रोत बन गयी हैं। विशेषकर, बाल विवाह जैसी कुरीतियों को लेकर सरोज दीदी काफी सजग रहती हैं। अपने क्षेत्र के लोगों को जागरूक कर दर्जनों बाल विवाह पर अंकुश लगा पाने में कामयाब भी हुयी हैं। सरोज दीदी बताती हैं कि–‘उन्होंने बाल विवाह से उत्पन्न समस्याओं को काफी करीब से देखा और महसूस किया है। उनका कहना है कि कम उम्र की विवाहित युवतियों को हमेशा स्वास्थ्य संबंधी खतरा बना रहता है।

महिला सशक्तिकरण की परिचायक बनी अमेरिका देवी

मधुबनी जीले की झंझारपुर, प्रखंड के सुखेत पंचायत की अमेरिका देवी, जो विगत बारह वर्ष तक समूह से जुड़कर महिला सशक्तिकरण की मिसाल बनी रही और 2021 के पंचायत चुनाव में अपने पंचायत की मुखिया के रूप में निर्वाचित होकर अपने पंचायत का प्रतिनिधित्व कर रहीं है। दिसंबर 2012 में लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर समूह की कोषाध्यक्ष बनी। वह गरीबी से जुझ रही थी, समूह से उन्हें 5000 रूपया का ऋण मिला, जिससे वे छोटी सी दुकान खोली, जिससे उनके परिवार का भरण – पोषण हो रहा था। उसके बाद उनका चुनाव अपने ग्राम संगठन जिज्ञासा जीविका की अध्यक्ष के रूप में हुआ। फिर 2016 ईस्वी में उनका चयन महिला शक्ति जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति अध्यक्ष के रूप में हुआ। संकुल संघ के अध्यक्ष पद पर रहते हुए नि: स्वार्थ भाव से सेवा करते हुए सरकार की योजनाओं को धरातल पर पहुंचवाने का काम किया जैसे – राशन कार्ड बनवाना, स्वच्छाग्रही के रूप में काम करना, शौचालय निर्माण करवाना कोविड के समय में जन – जागरूकता अभियान का नेतृत्व कर लोगों को इससे बचने का उपाय एवं टीकाकरण के लिए प्रेरित करना। इन कामों ने उन्हें क्षेत्र में लोकप्रियता दिलवाई। सुखेत पंचायत की मतदाताओं ने इनकी कर्मठशीलता से प्रभावित होकर, इन्हें जन प्रतिनिधि के रूप में अवसर देने का फैसला किया। वे मुखिया पद पर निर्वाचित हुई। उनके इस सफर में उस क्षेत्र के जीविका दीदियों का पूर्ण सहयोग मिला। अमेरिका देवी कहतीं हैं कि वे जीविका के सहयोग से हीं आगे बढ़ी है, जीविका से उन्हें आत्मबल एवं आत्म – सम्मान की प्राप्ति हुई है। वे जीविका परियोजना को आजीवन सहयोग प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध हैं।

स्वस्थ दीदियों से सशक्त आजीविका का संवर्द्धन

स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता के साथ–साथ आजीविका के बीच आपसी संबंध है। सामुदायिक संगठनों से जुड़ी महिलाओं को स्वस्थ रखने हेतु विभिन्न प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि वे आजीविका संबंधी गतिविधियां शुरू कर उसका सफलतापूर्वक संचालन कर सकें। दूसरी तरफ, आजीविका गतिविधि के सफल संचालन से दीदियों के घर आमदनी बढ़ रही है और वे पोषण संबंधी अपनी जरूरतें पूरी करने में सक्षम हुई हैं। इसी तरह स्वच्छता को अपने व्यवहार में शामिल करने से दीदियां स्वस्थ रह सकती है। यही कारण है कि जीविका द्वारा एक साथ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता के साथ–साथ आजीविका पर बल दिया जा रहा है।

आमतौर पर यह देखा गया है कि गरीबी की मूल वजहों में से एक प्रमुख वजह बीमारी है। किसी परिवार का कोई सदस्य जब बीमार पड़ता है तो उसके इलाज पर बड़ी राशि खर्च हो जाती है। किसी गरीब परिवार के लिए इलाज पर ज्यादा खर्च कर पाना असंभव होता है। फिर भी बीमारी के इलाज के लिए उन्हें कर्ज का सहारा लेना पड़ता है। उसके पास आजीविका का कोई साधन नहीं रहने से वह कर्ज चुकाने में भी असमर्थ हो जाता है। ऐसी स्थिति में परिवार गरीबी के दुश्चक्र में फंस जाता है। जीविका ऐसे परिवारों को स्वयं सहायता समूह में जोड़कर गरीबी के दुश्चक्र से बाहर निकालने में मददगार साबित हो रही है।

जीविका के तहत गरीब परिवार की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह से जोड़ा जाता है। समूह की नियमित साप्ताहिक बैठकों में स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर लगातार चर्चा की जाती है जिससे महिलाएं स्वस्थ रहने के प्रति जागरूक हो सकें। उन्हें स्वच्छता को अपने व्यवहार में शामिल करने हेतु प्रेरित करने के साथ ही सही पोषण की भी जानकारी दी जाती है। इसके अलावा समूह की दीदियों को अपने घर में पोषक बगीचा या किचन गार्डनिंग तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे घर में आसानी से जरूरत के अनुरूप पोषक सब्जियों एवं फल की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार सही पोषण एवं स्वच्छता को अपने व्यवहार में शामिल करने से स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को स्वस्थ रखने में काफी हद तक सफलता मिली है।

इसी तरह, समूह के माध्यम से दीदियों को आसानी से ;ण उपलब्ध कराया जा रहा है, इससे वे आजीविका गतिविधियों की शुरुआत कर रही हैं। दीदियां अपनी आजीविका का संचालन अच्छी तरह तभी कर सकती है, जब वे स्वस्थ एवं खुशहाल रहेगी। यही कारण है कि जीविका द्वारा समूह के माध्यम से महिलाओं को संगठित करने के साथ–साथ उन्हें स्वास्थ्य एवं पोशण जैसे विषयों पर जागरूक किया जा रहा है। इसके समानांतर दीदियों को आजीविका संबंधी गतिविधियों से भी जोड़ा जा रहा है। इस प्रकार गरीबी के दुश्चक्र से निकलने में जीविका स्वास्थ्य एवं पोषण के साथ–साथ आजीविका को बढ़ावा दे रही है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- सुश्री जूही – प्रबंधक संचार, खगड़िया